श्री सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम

श्री रसकान्ति

भादो जल-विहार

एवं

रास-विहार

पदावली

(छन्द-राग संकेतयुक्त)

सम्पादक-सह-प्रकाशक

महान्त सियाछबीली शरण 'भैय्या जी'

श्री सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम

श्री सीतानाथ समारम्भां रामानान्दाचार्य मध्यमाम् ।
अस्मदाचार्य पर्यन्ताम् वन्दे श्रीगुरु परम्पराम् ॥

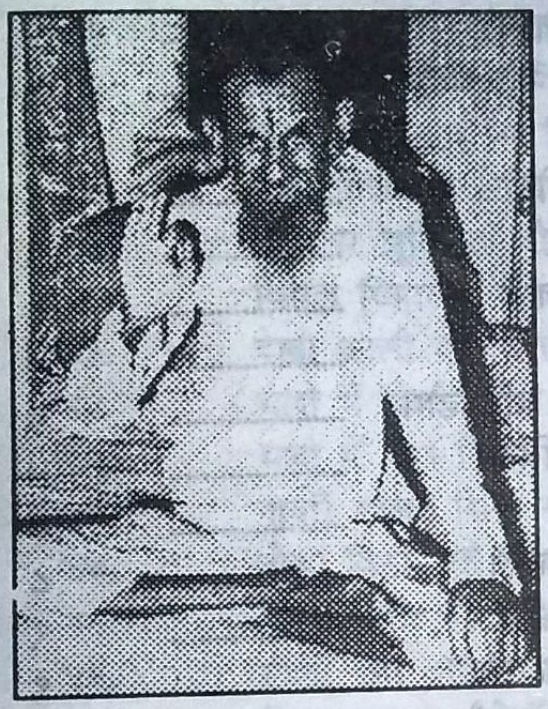

रसिकानन्य अनंतश्री
स्वामी शत्रुहन शरण जी
"रसकान्ति लता"
(श्री बिरौली सरकार)

अनंत गुरुसेवी महान्तश्री
सियाछबीली शरण
"भैय्या जी"

श्री रसमोद कुंज

श्री अयोध्या

श्री रसकान्ति भादो जल-विहार

प्रकरण (पद-सूची)

पद संख्या	पद	पृष्ठ सं०
१.	वारि विहार जात सियलाल	५
२.	उठी मन जल विहरनि की चहनि	५
३.	बैठे निरखत सरजु तरंगै	५
४.	बैठे निरखत सरजु हिलोरे	६
५.	सिया संग रघुवीर विहरे	६
६.	खेलत रघुवर जनक दुलारी	६
७.	नीर जान राजत रघुराई	७
८.	कूदत जल अलि चढ़ि चढ़ि छोम	७
९.	करत नवल दोउ वारि विहार	७
१०.	परि हेलि प्रभु मानस	८
११.	यहि विधि जल केलि हेलि	८
१२.	सरयू सरित् की आज सखी	९
१३.	जल विहार विहरत सीता संग	९
१४.	आज रघुलाल जल केलि करै	१०
१५.	जल विहार मिस रारि मचाई	१०
१६.	सिय रघुनन्दन सखिन के संग	११
१७.	आजु विहरनि सुजल मानसरि	११
१८.	श्यामा श्याम की वलिहारि	१२
१९.	दोउ जल विहरन हेतु चले	१२
२०.	खेलत नाव नावरी रघुवर	१२
२१.	नावरी खेलिये महराज	१३
२२.	श्री सरयू विच विमल विहारें	१३
२३.	झंझरी खेलि रहे सरयू में	१३
२४.	प्रेम सरि नाव युगल केली	१४
२५.	रसिक प्रिय झूलत हैं जलयान	१४
२६.	नावरि दोउ झूलत स्यामा स्याम	१४
२७.	नवारा घुम घननन्न चित्रम्	१५
२८.	रसिक दोउ खेलत नाव नवारी	१५
२९.	नाव पर खेलत प्रीतम प्यारी	१६
३०.	सरयू बिच नाव बनी आली	१६
३१.	निरखु सखि नावन की छवि	१६
३२.	नौका विहरि रहे पिय प्यारी	१७

३३.	विहरत सरयू सरित मझार	१७
३४.	अवध पिय खेलत वीर विहार	१८
३५.	खेलत राम नवारा, सिय संग	१८
३६.	खेलत नहरै नवारी लाल	१८
३७.	जुगल धन खेलत वारि विहार	१८
३८.	श्री सरयू महँ नाव विलास	१९
३९.	सरयू मध्य नाव पर विहरत	१९
४०.	देखो नौका पर सखि झूलें	२०
४१.	नाव पर झूलि रहे दोउ संग	२०
४२.	विमल विहार ए ए ए	२०
४३.	देखो आली दम्पति छवि	२१
४४.	भादो में जल विहार की	२१
४५.	भादो में जल विहार की क्या	२२
४६.	नावरि खेलत सिया रघुवीर	२३
४७.	नौका विहरि रहे पियप्यारी	२३
४८.	नागरी नवल नेह अरुझाय	२३
४९.	रजनी पहर अढ़ाई आई	२४
५०.	सिया रघुनाथ दोनों नाव में	२४

श्री रास-विहार

१.	पग धीरे धीरे धरिये रासेश्वरी	२५
२	पिअरवा झमकत आवै आज	२५
३	चलो सखि नटवर साज बनाई	२५
४	नवल दोउ रासकुंज में आये	२६
५	किये दोउ राजत रास सिंगार	२६
६	रास मंडल राजत पियप्यारी	२६
७	छुम छननन नाना गति लावै	२६
८	आवो गावैं माधुरी तान	२७
९	देखो देखो आली री आज	२७
१	लाल तेरे नयन मदन रस	२७
११	रास में रंग मचावे पिया	२७
१२	नृपलालन की सुंदर नटनियाँ	२८
१३	लखु नटनि कला छवि	२८
१४	नृतत लाडिले राम ललिहि	२८
१५	प्यारे नृत्यत लाडिली आज	२८
१६	रास महल प्रीतम रघुनंदन	२९

१७	रसरँग भरी छवि प्यारी	२९
१८	नवल प्यारी रसदानी हमारी	२९
१९	नवल प्यारे रसदानी पै वारी	३०
२०	पिय साँवली सुरति मन	३०
२१	आवो आवो पिया मिलि	३०
२२	रास मंडल नृत्यत पियप्यारी	३०
२३	रास मंडल नृत्यत दोउ रसिया	३१
२४	रासमंडल दोऊ नटनागर	३१
२५	पिय प्यारी के संग सोहि रहे	३२
२६	निरखु सखि युगलचंद छवि	३२
२७	आज दोउ गावत वीन बजाय	३२
२८	किशोरी सँग नृत्यत	३२
२९	अलिन सँग रास रमो	३३
३०	सरद की चाँद उजियारी	३३
३१	निरखु सखि आजु नटत	३३
३२	रासमें रसिया वेनु बजाई	३३
३३	नवल रस रास करैं	३४
३४	चलो सखी सरयूतीरे	३४
३५	सरयूकूले शरदनिकुञ्जे	३४
३६	सरयू पुलिने सोमसुवटतर	३५
३७	सरयू तट निरतत सिया	३५
३८	नृत्यत लाडिलि लाल	३५
३९	वन असोक के मध्य रमन	३६
४०	पिय रास रंग अब कीजै	३६
४१	निरतत सिय रघुवीर री हिय	३६
४२	रसिक दोउ रासमंडल मधि सोहै	३७
४३	नवल दोउ नृतत बहु तन धारी	३७
४४	आज रासमंडल दोउ राजैं	३७
४५	वन अशोक के मध्य अलिन	३८
४६	सरद परब लखि आजु चंद	३८
४७	सखि आई रसीली शरद रतिया	३९
४८	देखो सखि ! आवत रास बिहारी	३९
४९	सखिन बिच नृत्यत युगल किशोर	३९
५०	सीताराम रास करत सरयूतट माई	४०
५१	सियावर सीता प्यारी की (आरती)	४०

*

* श्रीसद्गुरुचरणकमलेभ्यो नमः *

श्री भादो जल-विहार

* राग श्री *

वारि विहार जात सियलाल ।
बैठे रथ पर दोउ विराजत, संग सखी गल माल ।।
विपुल बाजने बजत मनोहर, उमगत छवि की जाल ।
बहु सखि गावत नृत्य करत बहु, उघटत गति मिलि ताल ।।
कारी घटा सघन उमड़ी नभ, पपिहा रटनि रसाल ।
रसिक अली मग जात चले दोउ, सुखनिधि सिय रघुलाल ।।

(२)

*

उठी मन जल विहरनि की चहनि ।
महल सरोवर तीर खड़े छिन अवलोकत जल बहनि ।
सिया विहारी संग आय द्रुत, लहिये निज सुख लहनि ।।
जुगल विहार बहार प्यारमय, बनत नहीं मुख कहनि ।।

(३)

*

बैठे निरखत सरजु तरंगै ।
लली लाल अलि अवलि भली विधि सुभग समाज सुसंगे ।
मोदवंत सद संत सुसज्जन वृन्द सजे रस रंगे ।
प्रेम वारि बिच सुछवि निहारत स्याम गौर दुति अंगे ।।
दरस परस मज्जन सुपान करि होत महा भव भंगे ।
राम अयन रामायन पेखो रामहि वचन प्रसंगे ।।
सियपिय अमल कमल रस माते रसिकजनन मन भृंगे ।
जुगल विहारिनि नाव नवारी खेलत भरे उमंगे ।।

(४)

* स्नान विहार *

बैठे निरखत सरजु हिलोरे ।
सिय रघुवीर पीर हर जन मन धीर समीर बहोरे ।।
तट मणि जटित सोम बट प्रफुलित वन प्रमोद चहुँ ओरे ।
गुंजत मधुप मत्त रस रसिया जनु सुर गान करोरे ।।
अली भली कल कंज खिली कल प्रमुदित आनँद न थोरे ।
प्रिय प्रीतम स्नान करो अब जुगल विहारिनि कह कर जोरे ।।

(५)

* राग छाया नट *

सिया संग रघुवीर विहरे सरजू तीर ।
परसत पावन निर्मल दृगजा नीर ।।
पीत वसन तन सोहैं लला के
सिया के नवल तन सोहें कुसुमी चीर ।।
बहु विधि जल क्रीड़ा करत मगन मन
"सुन्दर" चहुँ दिशि सखियन मीर ।।

(६)

* खेमटा राग *

खेलत रघुवर जनक दुलारी ताल सलिल मधि लौने हो ।
सखी लसत चहूँ पास मनोहर छवि जनु सुषमा सौने हो ।
कोउ चाँवर कोउ छत्र लिये छवि भौने हो ।।
करत सो गान रसाल देखि रति गौने हो ।
बाजत झांझ मृदंग बाँसुरी टौने हो ।।
उछरत जल चहुँ ओर तरंग तरौने हो ।
सिय प्रीतम छवि देखि "रसिक" चित चौने हो ।।

* नौका विहार *

(७)

* राग श्री *

नीर जान राजत रघुराई ।
सियजू सहित भीर अलिगण की सुखमा अति सरसाई ।।
मणिमय घाट विशाल सरोवर, विकसे कंज निकाई ।
शीतल मंद सुरभि बह मारुत, चहुँ दिशि महल सुहाई ।।
चंदन पोत उदीत मणिन मय, यूपावलि रुचिराई ।
अति विचित्र पिधान चंदोवा झालर ध्वज छवि छाई ।।
ललित शिखर पर कुंभ विराजत छज्जे परम सुहाई ।
बिछे विछौना मृदुल मनोहर मध्य सिंहासन भाई ।।
तापर बैठे सिय रघुनन्दन अलिगन गान सुहाई ।
अगनित बाजे बजत करत अलि नृत्य मनोहर ताई ।।
सर बिच वंगला चित्र तहाँ दोउ उतरे अलि समुदाई ।
रसिक अली सजि नव पट अंगन बैठे अटा पर जाई ।।

* स्नान विहार *

(८)

* राग झंझोटि *

कूदत जल अलि चढ़ि चढ़ि छोम ।
मनहुँ गगन ते जल में प्रविसत बहु दामिनि की तोम ।।
पेन्हि अरुण पट कूदत जल जनु नभ ते चपला भौम ।
विपुल अली युत प्रीतम प्यारी कूदे जल बिच दोम ।।
जनु अकाश ते बहु उड़ अवली प्रविशे जल जुग सोम ।
किधौं चपला धन के संग 'रसिका' जल परि चपला नोम ।।

(९)

* राग तिल्लाना *

करत नवल दोउ वारि विहार ।
रघुनन्दन श्री जनक नन्दिनी गौर श्याम छवि ढ़ार ।।

बहु सखि मंडल रचि जल ताड़त दुहुँ कर घोष अपार ।
लेत कुलाँटैं बह जल ऊपर कर पिचकन की मार ।।
भाजत पौरि दौरि बहु छूवत बहुतक वचन प्रचार ।
बहुतक डूबि डूबि पग ऐंचत रसिक केलि मद भार ।।

(१०) *** हरि गीत छन्द ***

परि हेलि प्रभु मानस ललित ललि लाल कौतूहल रची ।
जल केलि व्रीड़ा भीड़ जहँ अहलाद क्रीड़ा कल मची ।।
जल जात कर उच्छरित जल जल जात फैंकहि अलि लची ।
तेहि संग भ्रमरि उड़ाहिं गुंजत देखि कवि शारद नची ।।
जनु पूर शशि टूटहिं विथकि अलि बाल तेहि रस लूटही ।
जनु स्वरन संपुट वेष्टि रसअलि अलि चपरि लै जूटही ।।
प्रभु लेत पुनि फैंकत लगत जनु अमिय घट भरि फूटही ।
जिमि राम चरण हवाय सिय पुर काम रति कर छूटही ।।

(११) *** चंचरीक छन्द ***

यहि विधि जल केलि हेलि खेलत पिय प्यारी ।
उमगत आनंद माल हँसत धरत ललिय लाल
अधर अधर पर सत मुख दरसत सुषमा री ।। १ ।।
मिलित लाल अलक बंक वेसरि उरुझेउ तटंक
अलिकच कुंडल बुलाक अरुझेउ उप मारी ।। २ ।।
जनु जुग विधु चष कुरंग गुरु द्वै रवि अरि अनंग
अहि रजु कसि वीच वैर सव तजि सुख भारी
बहु सखि निरुवारति करताल हँसि बजावती
वहु व्यंग राग गावती मन भावति नहि न्यारी ।। ३ ।।
करते कर जोरि सकल निर्तत जल उपरचपल
चरन चलत छुवत छटकि नूपुर रवकारी
रत्नालंकृत विचित्र जगमग जल बिच पवित्र

जनु धन दिवि तड़ित विपुल दमकत दुति वारी ।। ४ ।।
छुम छुम थेई थेई तरंग गावति पिय संग संग
चलित लजित गज अनंग बाजत कर तारी
अद्‌भुत रहस अनूप देखहि कोइ सखि स्वरूप
राम चरण देखैं किमि नयन अंध चारी ।।

(१२)

* गजल *

सरयू सरित् की आज सखी छवि अपार है
प्रियतम प्रिया का हो रहा नौका विहार है ।।
नौका अनेक रत्नमयी है सुहावनी
जिसकी प्रभा दिनेश दमक सम उदार है ।।
बैठे हुये हैं चित्रहरन राम और सिया
फूलों का अंग अंग में सुंदर सिंगार है ।।
यौवन अनूप मद से हैं दोनो छके हुये
अद्‌भुत हरेक अंग है छवि बेशुमार है ।।
शोभा प्रिया की देख के रात है लजी हुई
प्रियतम छवि के सामने छविहीन भार है ।।
राघव सिया के देखके नौका विहार के
परिकर के तन पै प्रेमपुलक वार-वार है ।।

(१३)

* नौका विहार *

जल विहार विहरत सीता संग सुन्दर वर रघुराई हो ।
गृषम काल तुषार सदृश मनु सरयू सुभग सुहाई हो ।।
चन्द्रकलादि सखीगण साथे शोभा वरनि न जाई हो ।
न्यारी न्यारी नाव सबन की शीतल सौज भराई हो ।।
लेह्य चोष्य फल विविधि भाँति लिये सौरभ वरणि न जाई हो ।
रहसि कोटि रचि नाव मध्य तहँ सौज सकल सजवाई हो ।।
करन लगे जल केलि विविधि विधि जल सीकर वर्षाई हो ।

कमलन मारि कमल कर झेलत लाघव लेत बचाई हो ।।
लपटि झपटि कटिपट कर झपटत केलि करत छवि छाई हो ।
कमला विमला मानसजा मिलि रचना विधि प्रगटाई हो ।।
अद्‌भुत कला केलि जल विहरे लोचन लाल लखाई हो ।
सीताराम रसिक रस रग मग ललित वसन सजवाई हो ।।
विविधि फूल फूले कुंजन में केलि करत मनभाई हो ।
अग्र अली तेहि वाग विहारन सिय रघुवर सुख पाई हो ।।

* स्नान विहार *

(१४)

* राग धनाश्री *

आज रघुलाल जल केलि करै तियन में
तियन में शीशमणि सिया संग वाल है ।।
अलौकिक ताल तामें बसै रसराज मानो
काढ़ै मनोज डारि सुखमा वर जाल है ।।
त्रिविध तियान संग बाढ़्यौ रस रास रंग
बूड़ि बूड़ि परसैं तन महा रस ख्याल है ।।
वाहिर निसारैं नवला को ऐंचि ऐंचि
कहाँ लौं बखानों करैं कोटिन सुचाल है ।।

(१५)

*

जल विहार मिस रारि मचाई ।
पौरि पौरि जल डूबि पकरि पग सुमन कंज लै मारति धाई ।।
सिय रुख पाय अली चपलावलि पिय घनश्याम घेरि लियो जाई ।
कर पिचकारिन सुमन गेन्द लै यह रस रारि देखि मन भाई ।।
अमित केतु कर राह शिरय शिर जल अकाश पिय शशि जनु पाई ।
भई रारि जनु सिय रमणी हित गुप्त खंड थकि रहे लुकाई ।।
अन्तर्ध्यान भये सखियन लखि निकसि सबै ढँढे अकुलाई ।
कुंज कुंज जल थल वन उपवन सुमन वाटिकन मन चित लाई ।।

सखियन विकल जानि आये पिय भीजे वसन मन्द मुसुकाई ।।
ज्ञाना अली प्रियतम प्यारी मिलि चली निदाधा कुंज लिवाई ।।

* स्नान विहार *

(१६)

* तिलंग *

सिय रघुनन्दन सखिन के संग ।
बहु प्रकार जल में विहरत दोउ करत अनेकन रंग ।।
जल विहार करि वसन सजे नव भूषण ललित सुअंग ।
करत आरती 'रसिक' नृत्य सुगान सुढंग ।।

* नौका जल विहार *

(१७)

* झपताल *

आजु विहरनि सुजल मानसरि प्रभु चले ।
नाव नावरि विविधि भाँति रचनावली,
कांति जगमग प्रभा छाय बहु विधि भले ।। १ ।।
क्रीट कुंडलनि द्युति चन्द्रिका तखरनि,
मिलित कल कलित, झलमलित आभा भले ।।
इन्द्रमणिनील कलधौत मुक्ता सुसंग,
प्रीतिलतिका खिली प्रेम ही फल फले ।। २ ।।
दिव्य सिंहासनासीन दम्पति मुदा,
सुलहि संपति अदा अवलि अलि कँज दले ।
मोहनी सीय पिय सोहनी रीति रस,
पोहनी सुमति हँसि सुभुज दीन्हे गले ।। ३ ।।
रसिक सत्संग सियकंत मुदवंत लखि,
साज सजि बाज बजि, गाय जस केवले ।
पाय रस भक्ति प्रद स्वामि गुरुदेव कर,
जुगलसुविहारिनि, निवस अवधहि थले ।। ४ ।।

(१८)

*

श्यामा श्याम की वलिहारि ।
भई सुरुचि जल सरजू विहरैं, खेलैं नाव नवारि ।।
नभ सघन घन वन सु छायो, स्वच्छता वारि ।
सजि सुनाव सिंहासनोपर, सोहे प्रीतम प्यारि ।।
श्री चन्द्रकला चन्द्रा चन्द्रानना, सकल साज सँवारि ।
जस श्री जानकि जान सखि, जलयान गान सुधारि ।।
नाव नाव मिलाव छिन पल, भल सुलेह विचारि ।
जुगल विहारिनि पर अपर सब, मत मताँतहि वारि ।।

(१९)

*

दोउ जल विहरन हेतु चले ।
नौकारूढ़ समाज अलीगन, सब सामान भले ।
गान तान सनमान सोहावन, पावन प्रेम पले ।।
सरयू देखि सिया रघुवर, गलवाँही रंग रले ।
अति उमंग सो रंग ढंग लहि, तरल तरंग तले ।।
भादव भल भावन हरि वासर, शुक्ल सोहाग फले ।
नाव नावरी खेल खेलारी जानकि वरहि मिले ।।

(२०)

*

खेलत नाव नावरी रघुवर ।
सीय समेत सखी सुख राजत, साजत भूषण वसन तरह तर ।
ध्वज रंगीन पताका फहरत, लहर लेत श्री सरयू ऊपर ।
बिछे बिछावन अति मन भावन, नाचत गावत जयति जयति कर ।
लूट लुटावत रंग वरसावत, लाल रतन बहु वर्षत मन भर ।

(श्री प्रीति प्रवाह से)

(२१)

*

नावरी खेलिये महराज, प्रेम बरस बरसाये ।
नौका सुभग सनेह सोहावन, अंग अंग प्रीतम छवि छावन,
सुन्दर लाल लली मन भावन, यह सुख देखना हो राज ॥ १ ॥
सरयू रंग उमंग न थोरी, कहूँ घटा कहूँ चन्द उजोरी,
अद्‌भुत रंग मच्यो चहुँ ओरी, सुख से खेलना हो राज ॥ २ ॥
तरह तरह के रंग रंगीले, कहूँ लाल कहूँ पीत रसीले,
मेघ श्याम कतहूँ चटकीले, सरयू कूलना हो राज ॥ ३ ॥
राज दुलारे जनक दुलारी, करत परस्पर खेल अपारी,
निरखि निरखि के सखि बलिहारी, प्रीतम भूलना मति राज ॥ ४ ॥

(श्री प्रीति प्रवाह से)

(२२)

*

श्री सरयू विच विमल विहारें ।
प्रीतम प्रिया सपरिकर सुन्दर, करत उछाह हजारें ॥ १ ॥
नाना रंग जटित मुक्ता मणि, नाव अनूप अपारे ।
अमित भाँति कल कांति कलातित घूमन माँझ सँवारे ॥ २ ॥
पुरवासी सानन्द विलोकहिं, लीला ललित उदारे ।
ह्वै रह्यो गान तान नृत्यादिक, रसिक जनन हितकारे ॥ ३ ॥
नवल नैनजा नीर निहारहिं, परसि सनेह सुधारे ।
जै जै धुनि परिपूरि रह्यो, तिन सुमन सुवृष्टि बहारे ॥ ४ ॥
जल विहार करि आय सुखद तट दिये दान बहु पियारे ।
युगल अनन्य शरण झूलन मधि, मच्यो मौज मनि वारे ॥ ५ ॥

(२३)

*

झंझरी खेलि रहे सरयू में, सिय संग अवधविहारी ना ।
रतन खचित मनि नाव बनी है, छज्जे में चान्दनी तनी है,
फर्श मखमली छटा छनी है, मनहर बूटेदारी ना ॥ १ ॥

विमल सलिल सरयू सरि सोहैं, विविध रंग पंकज मन मोहै,
भ्रमर गान सुनि विहँग नटो है, दादुर धुनि सुखकारी ना ।। २ ।।
चहुँ दिशि रंग रंगीली बाला, कोउ लिये पान इत्र कोउ माला,
मध्य सिंहासन पै सियलाला, मनसिज रति मदहारी ना ।। ३ ।।
कोउ सखि वीन बजावै गावै, लली लाडिले के मन भावे,
'कान्तिलता' रस सिन्धु समावै, अवसर की बलिहारी ना ।। ४ ।।

* जल झुलनी *

* पद *

(२४)

प्रेम सरि नाव युगल केली ।
भादो भाव भरित एकादशि सित भव भय हर झेली ।।
श्री गुरुवर उदार प्यार पर कीरति अलवेली ।
जलझूलनि सुख मूलनि अद्भुत सखि हूलनि हेली ।।
प्रभा अपार नाव नावन मधि आनन्द रस पेली ।
दम्पति सुख सम्पति विहार वर दोउ गर भुज मेली ।।
आय सुतट सद्गुरु सद् सदनहि सुषमा उर झेली ।
जुगल विहारिनि नित चित हित वित बढ़त प्रेम बेली ।।

(२५)

*

रसिक प्रिय झूलत हैं जलयान ।
फूल जलज सुअतिहि सुहावन निरखत हरखत प्रान ।
सीतल मन्द पवन पुरवाई झोंकत प्रीतम प्रान ।।
झोका देखि डरी सिय प्यारी लखि प्रीतम मुसुकान ।
जुगल विहारिनि देखि जुगल छवि रसिकन जीवन प्रान ।।

(२६)

*

नावरि दोउ झूलत स्यामा स्याम ।
श्याम घटा चहुँ दिशि में छाये, निरखत होत अराम ।। १ ।।

स्याम रंग के वसन सम्हारे, स्याम नयन सुख धाम ।
स्याम स्याम अलिगण जुटि, आई गावत राग ललाम ।। २ ।।
स्याम रंग के जलज मनोहर, फरस बिछे हैं स्याम ।
स्याम स्याम जल जंतु पुकारे, श्री सरजू जल स्याम ।। ३ ।।
गलवाँही दिये रसिक राय प्रिय, रसिकन के धन धाम ।
चन्द्रकला जी चारूसिला जी, गावैं सुभ गुन ग्राम ।। ४ ।।
छम छम छम छम सखीं सभ, निरतत ताल देत सिय स्याम ।
जुगल विहारिनि यह झूलन लखि, तन मन धन कत लाम ।। ५ ।।

* नौका जल विहार *

(२७)

* मलार *

नवारा घुम घननन चित्रम् चित्र बना ।। बना नान करिया ।।
मंडल मंडल फिरि फिरि घुंम घननन चित्रम चित्र बना ।
नावरि नावरि भिरि भिरि भिर मांझि प्रवीन प्रवीन
हेलनि मेलनि ठेलनि खेलनि बंजनि डांड भना ।।
सरयू गंगा के मधि में विहार रामजू करै
सखा सुवन्धु संग में कथिक तनय तनि भनै ।।
बजत यंत्र झननन ननन तेल तान तननननन
हरी लाल रूपसभा लखि मंगना ।।

*

(२८)

रसिक दोउ खेलत नाव नवारी ।
श्री सरयू की नहरि महल में, तामें नाव अपारी ।
सप्त खंड चन्दन की नौका, चहुँ दिशि खम्भ हजारी ।।
चित्र विचित्र मनोहर रचना, रंग रंग की न्यारी ।
फरस बितान कलश ध्वज, बन्धन मोतियन झालरदारी ।।
मध्य सिंहासन सिय पिय राजत, अलिगन सेवा धारी ।
बहु सखि साज बजावहि गावहि, नृत्य कला विस्तारी ।।

दुहुँ तट भीर भई अति भारी, बहु सखि चढ़ा अटारी ।
जल के जीव भये सब ऊपर, छवि निरखत मनहारी ।।
चढ़ी विमान सुमन सुर बरसत, सुखी भये सह नारी ।
'प्रेमलता' अनुपम जल झूलन, निरखत अलिनि सुखारी ।।

(२९)

*

नाव पर खेलत प्रीतम प्यारी ।
श्री सरयू मणि घाट मनोहर स्वच्छ सुभग सुचि वारी ।
दुहुँ तट भीर भई अति भारी, निरखत छवि नर नारी ।।
छोरत नाव परस्पर दम्पति हार जीत की यारी ।
सिय की नाव जीति सखि आई, प्रीतम की सखि हारी ।।
देव निशान बजाय सुगावहि, सुमन वरषि युत नारी ।
'प्रेमलता' छवि निरखत आली, जयजयकार उचारी ।।

(३०)

* नौका विहार *

सरयू बिच नाव बनी आली ।
अति विस्तार मनोहर रचना निरखि लुभानी रति माली ।
एक लक्ष वर द्वार सुहाये खंभन पुतली मणि ढाली ।।
चित्र विचित्र चांदनी तानी वन्दन मुक्ता मणि जाली ।
ता मधि कमलाकार सिंहासन राजत दम्पति सुख साली ।।
छत्र चँवर लिय अलिगन शोभित बाजन गान नृत्य ख्याली ।
'प्रेमलता' यहि छवि के ऊपर बहु रति मार वारि डाली ।।

(३१)

*

निरखु सखि नावन की छवि छाई ।
मृदु पाटीर मनिन की रचना, सुमन सुगंध सिंचाई ।
ललित खंभ सुठि सुभग वितान, झालरि जलज लगाई ।।
मध्य सिंहासन सिय पिय राजत, चहुँ दिशि सखि समुदाई ।
छत्र चँवर व्यजनादिक लीन्हे, गावति साज बजाई ।।

हाव भाव करि बहु सखि नाचति नूपुर धुनि सरसाई ।
वरनि न जाय मनोहर शोभा, बहु रति काम हराई ।।
शिव ब्रह्मादि देव सह नारी, हरषि सुमन वरषाई ।
प्रेमलता अनुपम छवि निरखत, आनंद सिंधु समाई ।।

(३२)

*

नौका विहरि रहे पिय प्यारी ।
सरजू जोन्ह जामिनी फैली, कुमुदिन की छवि न्यारी ।।
देखत कुंज निकुंजन शोभा, चले जात मझधारी ।
इत कुंजन नहि उत कुंजन बिच, चलिय कहति सुकुमारी ।।
तट द्रुम लता विंब जल झलकत, शोभा अनुपम धारी ।
अलि अवली ठगि जात छिनहि छिन, दंपति रस मतवारी ।।
आलस दृगन प्रिया लखि प्रीतम, कहत नैन सर भारी ।
इत मोहनि निकुंज निसि रहिये, हे मुख चंद उज्यारी ।।

(३३)

*** कजरी ***

विहरत सरयू सरित मझार, बैठे नौका बिच पियप्यारी ।
श्यामल मोर सुहावन अंग, मन्मथ रति मद हरन सुअंग ।
नूतन यौवन नवल उमंग, अद्‌भुत हाव भाव छवि न्यारी ।
अति गंभीर विमल सरिवारि, सोहत अंवर की अनुसरि ।
तिहि बिच मनिमय नाव सुढार, विलसत मानहु तरुन तमारी ।
अंतरंग परिकर सब संग, उघटत कल संगीत प्रसंग ।
छाय रह्यो है अनुपम रंग, करत प्रशंसा जनहित वारी ।
सब कोउ दंपति रूप निहारि, आनंदित तन मन धन वारी ।
ठाढ़े तन सुधि निपट विसारि, शोभा निरखि प्रेम वलिहारी ।।

(३४)

* मलार *

अवध पिय खेलत वीर विहार ।
हंसाकार नाव पर राजत, सँग सिय सखियाँ पियार ।
नाचहि घूमि गाय वाजन में, तिन सँग बजत सितार ।
मंद मंद मुसक्यात सखिन ते, सरजु तरंग निहार ।
राम सख्य अली जै जै कहि, वरसति सुमन सिहार ।।

(३५)

* सोरठा *

खेलत राम नवारा, सिय सँग सरजू धारा ।
खेवत बाँस लिये कर कमलन केवट वेष सम्हारा ।।
बोलत हसत कमर लचकावत, कौतुक करत अपारा ।
रामस्वरूप मांगि उतराई, मन हरि लेत हमारा ।।

(३६)

*

खेलत नहरै नवारी लाल ।
श्री सरयु परिखा मिलि आई, पूरब कोट के ताल ।।
मधुर चलत मोरपंखी तापर, बैठे युगल कृपाल ।
चमर छत्र विजनादि करहिं अलि, छवि लखि होत निहाल ।।
पूरब तट प्रमोद कुंजन ते, निरखहि अलि छवि जाल ।
आनि फँसे दृग मीन सबनि के, युगलप्रिया सुविशाल ।।

(३७)

*

जुगल धन खेलत वारि विहार ।
सरजू में मोर पंखी डारी, विद्रुम बेड़ा मझार ।
नौका पर बहु मेवा धरे हैं, सखियन झुंड अपार ।
मोर पंखी माथे रतन सिंहासन, राजत युगल सरकार ।
नाव नवरिया खेलन लागे, लुटवत मेवा थार ।।

करि अस्नान महल में आये, कुसुमासन बैठार ।
जन तिलामि नैनन फल पाये, बारबार वलिहार ।।

(३८)

*

श्री सरयू महँ नाव विलास
लगी फुलवारि वसंत की नैया ।
तामे हिडोर रच्यो रसवोर
किशोर किशोरि लसै मुसकैयाँ ।।
नाचहि गावहि मंद झुलाय
अली युग चंद की लेहि बलैयाँ ।।
संग सिया रसरंग मनी
जल झूलन झूलि रहे सिय सैयाँ ।।

(३९)

* नौका पर झूला *

सरयू मध्य नाव पर विहरत, रघुवर जनक दुलारी ।
कनक कील मणि खचित चंदन की, नाव नवल अति भारी ।
तापर सुभग चान्दनी तानी, मोतियन झालर दारी ।।
फरस खंभ मेहराव चहूँ दिशि, बनी हजारन द्वारी ।
ध्वज पताक बहु वन्दन माला, कुंडी झाड़ सँवारी ।।
मध्य भाग झूलन पर राजत, आलिन सहित पिय प्यारी ।
छत्र चँवर व्यजनादिक सोजैं, लीन्हे नव सुकुमारी ।।
बाजत साज मधुर सुर सुन्दर, नृत्य गान मनहारी ।
दुहुँ तट कुंजन ते सब निरखत, भीर लगी नर नारी ।।
भादो शुक्ल दिवस हरि वासर, यह उत्सव सुखकारी ।
'प्रेममोद' भरि छवि अवलोकति, प्रति सम्वत चख चारी ।।

(४०) *** कजरी ***

देखो नौका पर सखि झूलें, रघुवर जनक दुलारी ना ।
श्री सरयू के बीच धार में, छूटी नाव अपारी ना ।
दुहुँ तट मणिमय कुँज वाटिका, जल बिच झलक अटारी ना ॥
जल खग कूजत अलिगन गुंजत, कमल खिले रँग चारी ना ।
जल के जन्तु भये सब ऊपर, दम्पति रूप निहारी ना ॥
चढ़े विमान सुमन सुर वर्षत, वधुन समेत सुखारी ना ।
'प्रेमलता' सिय पियहि झुलावति, लखि छवि तन मन वारी ना ॥

(४१) *

नाव पर झूलि रहे दोउ संग, श्री सरयू के उछंग ।
दशरथनन्दन जनक नन्दिनी, श्याम गौर नव अंग ॥
कनक कील चन्दन की नौका, चित्रित मणि नव रंग ।
सप्त खंड मणि कुंज चहूँ दिशि, द्वार हजार अभंग ॥
मध्य हिडोल मनोहर रचना, पुतली भँवर विहंग ।
वरषत घन दामिनि की चमकनि, सरयू लेत उमंग ॥
राग मलार गाय अलि नाचति, बाजत वीण मुचंग ।
'प्रेमलता' यह अनुपम शोभा, लखि रति मदन सुदंभ ॥

* भादो का नौका विहार *

* संगीत *

(४२)

विमल विहार ए ए ए ।
दोउ रसिक चूड़ामणि ललित, लावण्य निधि उमगाय हिय जिय,
जानि हरिवासर सुभादौ सुकुल, भावन भव्य अँग अँग नव्य,
भूषन वसन रुचि सुचि, लखि लजत रति मार ॥ १ ॥
गलवाँह दै मुख माँह लै, बलिहारि प्रीतम प्यारी करि सुकुमारी
समय निहारि सुभग सँवारि नाव नवारि मध्य, सुभासनांकित
दिव्य रचना, रचि सुचि पति चकित चित से, हँसे नयन निहार ॥ २ ॥

दुहुँ मिलि मंजुल वरन, मन भावनी छवि छावनी जस पावनी अलि गावनी, गति मृदंग जलज तँवूर करज सितार प्यार अपार प्रद लखि, सरजु उमँगि अपार ।। ३ ।। पिय स्याम घन सिय दामिनी, अभिरामनी मूरति सुसूरति, प्रीति परि पूरित अदूरति, नित्य जुगल विहारिनि, रमनीय दंपति केलि सम्पति, पाय श्री सतगुरु, कृपा कल परत प्रेम को हार ।। ४ ।।

(४३) * नौका विहार : संध्याकालीन *

देखो आली दम्पति छवि भई सांझी ।
विहरत नौका बैठि सिया संग अलि अलकन में बाझी ।।
सांझ समय बिच वन प्रमोद के श्री सरयू छवि पावै ।
तट द्रुम लता वितान अपूरव सोभा कहत न आवै ।।
उत मनिमय मनि पर्वत झलकत रंग विरंग छटा सों ।
मृदु पंच्छी जहँ जहँ जो बोलत प्यारी नाम रटा सों ।।
मंद हँसनि मुरि तिरछी चितवनि वरवस सखि मन लूटै ।
छिन छिन हिय चुभि जात अचानक घाव तनिक नहि जूटै ।।
कमल करन सो कमल फिरावत हलक वुलाक सुन्यारी ।
कमल नैन मुख कमल विलोकत वरसत सोभा भारी ।।
नीर लेत नीरज कर कबहूँ झुकि प्रीतम पर प्यारी ।
उर परसत छवि आन भई लखि मोहनि केलि पसारी ।।

* रात्रिकालीन नावरी *

(४४) * गजल *

भादो में जल विहार की कैसी बहार है ।
घाटों पै सजी नाव की लम्बी कतार है ।।
छिटकी है चान्दनी कभी काली घटा छाई ।
तेजी से बह रही श्री सरंजू की धार है ।।
खेलेंगे नाव नावरी रघुवीर सिया आज ।
सुनि दरसकों की भीड़ लगी बेशुमार है ।।

आये रँवा की धार के पोशाक लली लाल ।
बैठे हैं गले बाँह दे शोभा अपार है ।।
आई भरी उमंग सिया प्यारी की सखियाँ ।
सज धज निराली आज अनूठा सिंगार है ।।
गाती हैं नाचती हैं भरी शान में सखियाँ ।
कोई बजावे वीन तो कोई सितार है ।।
दम्पति सने सनेह में रसरंग के माते ।
'सुन्दर' युगल किशोर पै तन मन निसार है ।।

(४५)

*

भादो में जल विहार की क्या धूम मची है ।
समा है रास रंग के और नाव सजी है ।।
फहरा रही हैं सैकड़ों खुश रंग झंडियाँ ।
लहरा रही है सरजु क्या आनन्द भरी है ।।
शवनम के बचाने के लिये चांदनी उज्ज्वल ।
सुवरन के चमकदार सितूनों पै तनी है ।।
पड़ती है झलक आब में रंगी फनूस की ।
होता है गुमां जल में गोया आग लगी है ।।
गाती है मधुर स्वर से सखी राग रागिनी ।
खुश हो के कह उठे हैं सियावर कि सही है ।।
आने लगी हरसू से सदा वाह वाह की ।
श्री चन्द्रकला प्यारी की जब वीन बजी है ।।
मुसकाते हैं रघुवीर सिया दे गले बहियां ।
प्रीतम भरे सनेह प्रिया प्रेम पगी है ।।
रघुवीर लिये पिचकारी हजारा भरि गुलाब ।
बरसाते इस तरह मानो सावन की झरी है ।।
दंपति की छटा माधुरी लखि अंग की 'सुन्दर' ।
परिकर है शादमान खिली दिन की कली है ।।

* राग विहाग *

(४६)

नावरि खेलत सिया रघुवीर ।
भादो शुक्ल रैनि उजियारी सीतल सुखद समीर ।
जुगल प्रकाश परत जल सरजू उठत तरंग गंभीर ।।
नौका साज समाज मनोहर भई सखियन की भीर ।।
करत विहार प्रिया सह प्रीतम सरजू पावन नीर ।।
'सुन्दर' गान करत बहु अलियाँ पहिर सुरंगी चीर ।।

(४७)

*

नौका विहरि रहे पियप्यारी ।
सरजू जोन्ह जामिनी फैली कुमुदिन की छवि न्यारी ।।
देखत कुंजनि कुंजनि सोभा चले जात मँझधारी ।
इत कुंजन नहि उत कुंजन बिच चलिय कहति सुकुमारी ।।
तट द्रुम लता विम्ब जल झलकत सोभा अनुपम धारी ।
अलि अवली ठगि जात छिनहि छिन दम्पति रस मतवारी ।।
आलस दृगन प्रिया लखि प्रीतम कहत नैन सर मारी ।
इत मोहनि निकुंज निशि रहिये हे मुख चन्द उजारी ।।

(४८)

*

नागरी नवल नेह अरुझाय ।
उतरि चली पिय कोमल कर धरि कुंजन दिशि मुसकाय ।।
हंस गवनि निरखत प्रीतम दिशि मधुरी सैन चलाय ।
छवि अमृत वरसत चारो दिशि अलि दृग पियत अघाय ।।

नवल निकुंज नवल सेजियन सुख नवल पिया मन भाय ।
विहरति नव अँखियां रस माती नव रस वस ललचाय ॥
इक दिशि चन्द्र चन्द्रिका फैली इक दिशि घन दरसाय ।
नव दम्पति नव मोहनि लीला निरखि सखी वलि जाय ॥

(४९)

*

रजनी पहर अढ़ाई आई ।
नव रस सुरति छके पिय प्यारी सैन सुरति विसराई ।
चंचल दृग थिर होत न छिनहूँ आलस अंग दरसाई ॥
पौढे मोहनि सेजियन मुख पर चंद किरन छिटकाई ॥

(५०)

*

सिया रघुनाथ दोनों नाव में बैठे विचरते हैं ।
परम सुख दायिनी सरयू सरित को सैर करते हैं ।
विविध मनिगन खचित अति ही प्रकाशित है ललित तरनी ।
इसे अवलोकि कर नभ के तरनि विस्मय में भरते हैं ॥
प्रिया प्रीतम निरखते हैं सरस छवि बीचि पुँजों की ।
जो उज्ज्वलता से मुक्ता मालिकाओं को निदरते हैं ।
युगल हैं देखते क्रीड़ा विविध ही जल बिहंगों की ।
जो गोता मारते हैं बोलते हैं और तरते हैं ।
कभी करते हुये आपस में बतियाँ रसभरी दोनों ।
परस्पर रूप मद से मस्त होकर अंक भरते हैं ॥
मनोहर केलि दम्पति की ये सम्पति हैं असाधारण ।
रसिकजन प्रेमयुत इसको हृदय मन्दिर में धरते हैं ॥

*

* श्री रास-विहार *

रसिक कुलभूषण श्री विदेहजा शरण "प्रेमलताजी" कृत

रास-उपक्रम

पग धीरे धीरे धरिये रासेश्वरी ।
अति कोमल सुकुमार सलोनी रूप सुरंग भरी ।।
नूपुर धुनि सुनि अति सुख सरसत तान सुराग झरी ।
गौर वरन पर स्यामल सारी घन दामिनि दुति मंदकरी ।।
भूषन युत मुखचंद अनूपम रास अजिर नभ जोति सरी ।
पिय चकोर लखि तनमन फूले रसमाला रससिन्धु परी ।।

(२)

*

पिअरवा झमकत आवै आज ।
जनकलली की छवि अवलोकत छाकि रहे रसराज ।
पग नूपुर कटि किंकिनि बाजै नटनि बसन तन भ्राज ।।
उर मोतिन की माल विराजत डोलत कुंडल ताज ।
'प्रेममोद' अलिगन छवि निरखैं गावत साज सुबाज ।।

(३)

*

चलो सखि नटवर साज बनाई ।
वन प्रमोद के रास महल में आनँद रस बरसाई ।।
हाव भाव करि साज बजावैं, पियप्यारी गुन गाई ।
युगलकिसोर प्रानधन-जीवन बहु बिधि लाड़ लड़ाई ।।
सियस्वामिनि की कृपा सहेली महल-टहल मनभाई ।
'प्रेमलता' सतगुरु की करुना आनंद सिन्दु समाई ।।

(४) *

नवल दोउ रासकुंज में आये ।
अरस परस गलबाँही दीन्हें नटवर बेष बनाये ।।
छत्र चँवर लिये अलिगन सोहै सेवा सौज सजाये ।
मंद गमन गज हंस लजावन नूपुर धुनि सरसाये ।।
कुंजेश्वरी आरती कीन्हीं मनिभूषन निवछाये ।
आय सिंहासन राजे दंपति 'प्रेमलता' मन भाये ।।

(५) *

किये दोउ राजत रास सिंगार ।
युगल सखी सिर छत्र फिरावै युग युग चँवर सुढार ।
षोडश सखी बाद्य सजि चहुँ विधि वीन मृदंग सितार ।।
अमित अली नव बरन मनोहर सोभित मंडलकार ।
'प्रेमलता' करि रास आरती निरतति सुछबि निहार ।।

(६) *

रास मंडल राजत पियप्यारी अति सोभा सरसाई रही ।
नवल सिंगार किये नखसिखलौं स्यामगौर छवि छाई रही ।।
बहु सखि छत्र विजन लिय चाँवर कोउ सखि पान पवाई रही ।
बहु सखि वीन मृदंग लिये कर साज अनेक बजाई रही ।।
बहु सखि नृत्यति दंपति आगे गान मधुर सुर गाई रही ।
'प्रेमलता' रासरंग बढ़ावति यह शोभा मन भाइ रही ।।

(७) * सखियों के नृत्यगान *

छुम छननन नाना गति लावै सुनि दंपति के मन भावै ।
बाजत वीन मृदंग मजीरा नूपुर ताल मिलावै ।।
नयनसयन करि भाव बतावै नभ मंडल स्वर छावै ।
कबहुँ खड़ी सब तन नहिं डोलै कबहुँ तालसे धावै ।।
कबहुँ चक्र सम कर गहि धूमै कबहुँ बिलग होइ जावै ।
'प्रेमलता' रसरंग बढ़ावै गान तान सरसावै ।।

(८)

*

आवो गावैं माधुरी तान रास रस रंग भरी ।
हाव भाव अंग मोरि सहेली रासमंडल करि मदन झरी ।
रसिक सुजान सबहि के मनकी आस पूरिहैं रंग ढरी ।।
रास विलास करहि मनभाये सियस्वामिनि बस नाह करी ।
श्यामगौर छवि देखि मनोहर 'प्रेमलता' रससिंधु परी ।।

(९)

*

देखो देखो आली री आज, युगल छवि नवल बनी ।
सियपिय ललित सिंहासन राजै रतिमनमथ को मान हनी ।।
गौर स्याम मनहरन सोहाये छवि सिंगारमय अंग सनी ।
भूषन वसन नवल तन सोहै अनुपम उपमा कौन भनी ।।
पान खात मुसकात रसीले डोलत नासा नवल मनी ।
'प्रेमलता' सियपिय छवि निरखत नवल छबीली मोद ठनी ।।

(१०)

*

लाल तेरे नयन मदन रस माते ।
कंज खंज मृग मीन लजावन अनुपम नहिं उपमा के ।।
प्यारीके तन छनछन हेरत कोटि काम से बाँके ।
'प्रेमलता' अगजग के मोहन एकबार के ताके ।।

(११)

* प्रियतम का नृत्यगान *

रास में रंग मचावे पिया ।
नवकिसोर चितचोर छबीले नवनागरि सुकुमारि तिया ।
अंग अंग रस भरी रसीली मदन मनोरथ उमग हिया ।।
मन भावत रस छाको छबीले तोष करो आनंद जिया ।
'प्रेमलता' सियपिय रसकेली देखत हिय धरि सुरति दिया ।।

(१२)

*

नृपलालन की सुंदर नटनियाँ रे ।
फहरत पीत वसन चटकीली नूपुर पग झमकनियाँ रे ।
अङ्ग सुगंध उड़त मनभावन भूषनकी चमकनियाँ रे ।।
भाव भरे मृदु तान उचारनि चितवनि रस बरसनियाँ रे ।
'प्रेममोद' स्वामिनि के सुख में प्रीतम हिय उमगनियाँ रे ।।

(१३)

*

लखु नटनि कला छवि लालन ।
रंग भरी गति लेत मनोरम भावन अंगन हालन ।
फहरनि वसन विभूषण चमकनि चितवनि रस सिर चालन ।।
ताल लेत मृदु गान अनूपम बाजत सब मिलि तालन ।
'प्रेममोद' सियपिय सुख भीनी प्राननाथ रुचि पालन ।।

(१४)

* लावनी *

नृतत लाडिले राम ललिहि दरसाते ।
मंडल रास बनाय अलिन सँग राते ।।
गति थिरकि झुकि लेत कमर लचकाते ।
नूपुर धुनि सरसात सुसम पर आते ।।
हाव भाव कर मोरि सुपट फहराते ।
मधुर मधुर सुर गान सुतान बढ़ाते ।।
अलक छुटी मुखचंद भौंह चमकाते ।
नासामनि हलरान सुग्रीव नचाते ।।
'प्रेमलता' सिय सेई पियासुख पाते ।
प्रीतम रास विलास सखिन मन भाते ।।

(१५)

*

प्यारे नृत्यत लाडिली आज कला दरसाय रही ।
नुपुर मधुरगति पगनि सुसमधरि किंकिनि धुनि सरसाय रही ।।

चंचल चख कर मुरनि ढुरनि करि हाव भाव छहराय रही ।
ग्रीव हलनि कलमंद हसनि छवि मधुर सुधा बरसाय रही ।।
वंक तकनि सिर झुकनि मनोहर गान तान नभ छाय रही ।
करुना कोष भरी सिय स्वामिनि 'प्रेमलतहि' अपनाय रही ।।

(१६)

*

रास महल प्रीतम रघुनंदन निरतत रस मतवारे ।
गावत सिय गुन रूप अनूपम नयनन सुछवि निहारे ।
छुमछुम छुमछुम नूपुर बाजै कटि किंकिनि झनकारे ।।
मोर हंस पारावत गति लै कंदुक करनि उछारे ।
'प्रेममोद' सिय निरखि मगन भई आनँद सिंधु अपारे ।।

(१७)

*

रसरँग भरी छवि प्यारी अंग तरंगन पर बलिहारी ।
वेनी अलक सवेंदी टीका मोतिन माँग सँवारी ।
सीस चंद्रिका श्रवन विभूषन भाल तिलक दुतिकारी ।।
भृकुटी नयन कपोल नासिका वदन चिबुक मनहारी ।
कंठ उरज भुज नाभि श्रोनि तट ऊरु जानु जंघा री ।।
नखसिखलौं वर वसन विभूषन जगमग जोति पसारी ।
'प्रेममोद' की सर्वस स्वामिनि मेरी प्रान अधारी ।।

(१८)

*

नवल प्यारी रसदानी हमारी ।
नखसिखलौं सब अङ्ग मनोहर कोटिन रति छवि हारी ।
कोटि चंद सम वदन सोहावन दृग चकोर सुखकारी ।।
एक पलक बिनु लखे कलप सम जीवन प्रान अधारी ।
'प्रेमलता' प्यारीके ऊपर तन मन धन सब वारी ।।

(१९) * प्रिया गान *

नवल प्यारे रसदानी पै वारी ।
रूप अनूप मदन मद मोचन नयन विसाल जुलुफ कारी ।।
मंद हसनि चितवनि मनमोहनि जीवन प्रान हमारी ।
कुंडल तिलक मुकुट मन भावन नासामनि उजियारी ।।
सब गुन सागर नागर रसिया वय किसोर छवि भारी ।
'प्रेमलता' रसिकन मनमोहन सुंदर अवध विहारी ।।

(२०) *

पिय साँवली सुरति मन भावनियाँ ।
रसमय अंग मनोहर सुंदर कोटि अनंग लजावनियाँ ।
भूषन वसन नवल तन सोहै रासमंडल छवि छावनियाँ ।।
अगजग मोहन मूरति प्यारे रस वरषा बरसावनियाँ ।
नयन विसाल मंद मुसुकावनि रसिकन चित्त चोरावनियाँ ।।
सब गुनसागर नागर रसिया रास विलास बढ़ावनियाँ ।
'प्रेमलता' मन आस पुरैहैं सुरति विलास रमावनियाँ ।।

(२१) *

आवो आवो पिया मिलि जाउँ सँग सँग नृत्य करैं ।
रस मती अलिगन सुख पैहैं हिय अनुराग भरै ।।
राग ताल सब सुफल करै मिलि निज निज गुननि सरै ।
'प्रेममोद' प्यारीकी वानी सुनि पिय रंग ढरै ।।

(२२) * युगल नृत्य गान *

रास मंडल नृत्यत पियप्यारी विपिन प्रमोद मझारी ।
वन उपवन रितु कुंज निकुंजन सरद चंद उजियारी ।।
कुंद गुलाब मालती चंपक कमल कुमुद विकसारी ।
भँवर गुंज खग कूजनि रसमय त्रिविध पवन सँचारी ।।

बाजत ताल अनेक जंत्र मिलि रागिनि राग उचारी ।
नव मंडल नव रंग अलिन के स्याम सँग कर धारी ।।
कोउ सखि सिर पर क्रीट सुछबि लखि कुंडल अलक सँवारी ।
कोउ सखि नयन बिसाल सुअञ्जन नासामनि दुतिकारी ।
कोउ सखि चिबुक विंद भुजभूषन कर परसत रुचिप्यारी ।।
गोप पदिक वनमाल नवल छबि कोउ निरखत सुखभारी ।
नवल मुद्रिका कटि किंकिनि वर बसन घुमार सुन्यारी ।।
कोउ सखि नूपुर जावक पदनख चिह्न रंग रस भारी ।
'प्रेममोद' यह रास अलौकिक रसिकन दृग हिय धारी ।।

(२३)

*

रास मंडल नृत्यत दोउ रसिया छवि बरनी नहिं जाई ।
छुमछुम छुमछुम चरन परत महि गावत तान मिलाई ।
कर से कर धरि घूमत दोऊ नवल वसन फहराई ।।
स्यामगौर तन नीलपीत पट मिलित हरित छवि छाई ।
'प्रेममोद' रसकेलि अनूपम निरखि नयनफल पाई ।।

(२४)

*

रासमंडल दोऊ नटनागर नृत्यत रस मतवारे ।
ताथेई ताथेइ तातथेई मृदुस्वर मुखनि उचारे ।।
नूपुर किंकिनि कंकन की धुनि फहरत पट सुधुमारे ।
उघटत हाव भाव दृग फेरनि अरसपरस कर धारे ।।
बेनी अलक कपोल पृष्ठपर हलरत गल मनिहारे ।
कबहुँक विलग विलग होइ घूमत ताल देत न्यारे न्यारे ।।
साज समूह बजावत अलिगन गान सुतान सँवारे ।
रसमाला सुख बरसत चिन्मय 'प्रेमसुमोद' अपारे ।।

*

(२५)

पिय प्यारी के संग सोहि रहे ।
हाव भाव करि रस बरसावत, अलिगन के मन मोहि रहे ।।
गलवाँही दै निरतत दोऊ, गान तान नभ छाय रहे ।
कटि लचकनि मोरनि भुज ग्रीवा, नूपुर धुनि सरसाय रहे ।।
वीन मृदंग आदि सब साजैं, चहुँ दिसि सखिन बजाय रहे ।।
मंडलकार सखी चहुँ ओरी, रस सागर उमड़ाय रहे ।
'प्रेमलता' छवि वरनि न जाई, मन अभिलाष पुराय रहे ।।

(२६)

*

निरखु सखि युगलचंद छवि छाई ।
जनकलली रघुलाल सलोने, सुख अमृत बरसाई ।
रास अजिर आकास मनोहर, अलि तारा समुदाई ।।
रसिक चकोर निरखि दृग लोभे, देहदसा बिसराई ।
'प्रेमलता' रस उमग बढ़ावति बहु रतिकाम लजाई ।।

(२७)

*

आज दोउ गावत वीन बजाय ।
रास मंडल राजत पियाप्यारी, श्याम गौर छवि छाय ।।
तान लेत इक संग दोउमिलि, चहुँदिसि रस बरसाय ।
हावभाव करि कला दिखावैं, सबके चित्त चोराय ।।
मुरनि ढुरनि मुसकानि मनोहर, नयनन सयन चलाय ।
'प्रेमलता' रसरंग बढ़ावत, मनसिजदेव मनाय ।।

(२८)

*

किशोरी सँग नृत्यत राजकुमार ।
करसे कर गहि अरसपरसपर गावत ताल सँभार ।
अतर पान माला पट भूषन देत लेत करि प्यार ।।
तत घन सुषिर अनद्ध चतुर विधि बाजत साज अपार ।
'प्रेममोद' चहुँदिसि छबि निरखै अलिगन मंडलाकार ।।

* सखियोंके सहित युगल नृत्य *

(२९)

अलिन सँग रास रमो पियप्यारी ।
ब्योम अजिर मधि बिधु उतपूरन रास रचेउ सह नारी ।
युगलचंद इत रास अजिर में कोटि चँद छवि हारी ।।
वन प्रमोद बिच आनि जुरी सब नागर वृंद अपारी ।
चहुँ दिसि मनिमय कुंज अनेकन तामें सेज सँवारी ।।
रास विलास रमो मन भाये प्रेम केलि विस्तारी ।
'प्रेमलता' सबकी अभिलाषा पूरिये भाव बिचारी ।।

(३०)

* रेखता *

सरद की चाँद उजियारी । प्रमुदवन रासहें प्यारी ।।
बेदिका एक अति भारी । चहूँ दिसि लागि फुलवारी ।।
चँदी वा स्वच्छ है तान्यो । करोड़ों चँद छबि हारि ।।
नटत है नागरी नागर । सखीगन मंडलाकारी ।।
बजै धुनि किंकिनी नूपुर । सितारे वीन करतारी ।।
बहै बहु यंत्र मिलि गावैं । नचै सब ताल अनुहारी ।।
रसिक रस 'प्रेम' में पागे । लखत नित रास सुखभारी ।।

(३१)

*

निरखु सखि आजु नटत पियप्यारी ।
जनु घन दामिनि दै गलबाँही रसहित नव तन धारी ।
अमित अली करसे कर धारे चहुँ दिसि मंडलकारी ।।
वीन मृदंग आदि सब साजैं मिलि बाजत मनहारी ।
तान लेत इक संगहि मिलि सब 'प्रेम' सुरस मतवारी ।।

(३२)

* महारास *

रासमें रसिया वेनु बजाई ।
वनप्रमोद की कुंजगलिन में रसमय धुनि रहि छाई ।
सर सरिता वन लता द्रुमन पर चंद किरन झलकाई ।।

अगनित यूथ अलिन मधि प्यारो प्यारी के सँग गाई ।
'प्रेममोद' सुर निरखि मगन नभ सुमनमाल बरसाई ।।

(३३)

*

नवल रस रास करैं पियप्यारी ।
नवमंडल नव वरन अलिन के अरस परस कर धारी ।
मोर हंस सारस पारावत लेत ललकि गति न्यारी ।।
बाजहिं वीन मृदंग मुरलिका झाँझ मुचंग सितारी ।
इकसुर गान करहिं सब मिलिकै नूपुरकी झनकारी ।।
नाना भाव भेद दरसावहिं नव यौवन मतवारी ।
'प्रेमलता' सियपिय छबि निरखत इकटक पलक न टारी ।।

* श्रीसरयूतट का रास *

(३४)

चलो सखी सरयू तीरे जहँ, रास रचे दोउ लाल लली ।।
वन प्रमोद द्रुमलता सुहावनि फटिक मनिनमय स्वच्छ थली ।
सोहत सरित सरोवर निर्मल फूलि रही बहु कुमुद कली ।।
कोकिल मोर चकोर पपीहा कूजत गुंजत वृंद अली ।
विमल अकास चंद परिपूरन सरद परब की रैनि भली ।।
वरनि न जाय मनोहर सोभा, आनँद उमगत कुंज गली ।
अस कहि रास थली चलि आई 'प्रेमलता' रससिंधु हली ।।

(३५)

*

सरयूकूले शरदनिकुञ्जे निरखि चन्द्रमुख धामं ।
सखिगण मध्य रासरमन्ते सियजूके सँग रामं ।
विपिन तड़ागे कमल विकाशे भ्रमरगुञ्ज अभिरामं ।।
वीणा मृदङ्गे गानतरङ्गे चन्द्रमुखी कर गानं ।
प्रेमलतायाः दृगसुख लागे पूरणकुरु मनकामं ।।

(३६)

*

सरयू पुलिन आज पियप्यारी नटत अलिन सँग मंडलकारी ।
उभय सखी बिचबीच श्याम इक जनु तमालतरु कनकलतारी ।।
चंचल चखकर भाव उघारे छुमछुम चरन ताल गति धारी ।
नवरँग पट फहरत धुनि भूषन ताथेई ताथेई मुखनि उचारी ।।
बाजत वीन मृदंग तमूरा बंशी बेनु मृदंग सितारी ।
तान तरंग साजसे निकसत रसमय चिदानंद मनहारी ।।
स्यामगौर प्रतिबिंब परत महि जगमगात छबि अद्‌भुत भारी ।
कबहुँ विलग होइघूमि चक्र सम सन्मुख करधरि नयन निहारी ।।
मन भावत सुख देत सबनिको दक्षिन नयक गुन विस्तारी ।
'प्रेममोद' अनुकूल सियाके ततसुख में नित रहत सुखारी ।।

(३७)

*

सरयू तट निरतत सिया रघुवीर री ।
मंडलकार अलीगन चहुँ दिसि चमकत भूषन चीर री ।
फहरत वसन सुगंधन छहरत सरसत त्रिविध समीर री ।।
तन धन सुषिर अनद्ध सुबाजत राग तान गंभीर री ।
'प्रेममोद' तुरिया तन दरसै नाशत तीन शरीर री ।।

(३८)

* लावनी *

नृत्यत लाडिलि लाल सखिन सँग राते ।
पूरन चँद प्रकाश सुधा बरसाते ।।
श्री सरयू तर तीर लता तरु फूली ।
गुंजत मधुकर श्रेनि सुसौरभ माते ।।
शोभित विविध वितान कुंज मनि भूमि ।
त्रिविध पवन सरसात हुलास बढ़ाते ।।
वीन मृदंग सितार मुरलिका बाजे ।
हाव भाव सम ताल सुराग सुहाते ।।

मंडल विविध बनाय चक्र सम घूमै ।
उभय सखी यक श्याम मध्य छबि पाते ।
'प्रेमलता' करि रास सिया सँग राजे ।
नित यह रास विलास रसिकजन गाते ।।

* श्री अशोकवन का रास *

(३९)

वन असोकके मध्य रमन दोउ रमत रास विस्तारी ।
सरद परब की रैनि सुहावनि पूरचंद उजियारी ।।
सेत बितान तने तर ऊपर तीन खंभ की धारी ।
तातर कमलाकार सिंहासन राजत प्रीतम प्यारी ।।
नवल सिंगार किये राजति अलि चहुंदिसि मंडलकारी ।
क्रमसे उठि उठि दंपति आगे नृत्यति भाव उधारी ।।
सियपिय उमगि उमगि सबके सँग रमत सुरुचि अनुसारी ।
'प्रेममोद' बहु साज सुबाजहिं गान तान मनहारी ।।

(४०)

*

पिय रास रंग अब कीजै सब आलिन को सुख दीजै ।
तन मन धन सबही अरपन करि मम बल नित रहीजै ।।
मम प्रतिबिं बिंब सम मिलिये कुशल कलन रस पीजै ।।
'प्रेममोद' हिय दृग द्वारे भरि सबकी सेवा लीजै ।।

(४१)

*

निरतत सिय रघुवीर री हिय उमगत रस गंभीर री ।
बिपिन असोक सरजुतट सुंदर भूमि कनकमनि हीर री ।।
रास मध्य दोऊ नटनागर चहुँदिसि आलिन भीर री ।
छाय रही भूषन धुनि रसमय फहरत नवरंग चीर री ।।
गान तान मनहरन साज सब वीन मृदंग मजीर री ।
'प्रेममोद' यह छबि अवलोकत हरत मदन की पीर री ।।

(४२)

*

रसिक दोउ रासमंडल मधि सोहै ।
हाव भाव रसचाव तरंगन अरसपरस मन मोहै ।
वन अंशोक सरजूतट मनिमय अगनित कुंज बनी है ।
चिन्मय केलि कला रस उघटै जालरंध्र अलि जोहै ।।
कोटि कलप जहँ छन सम लागत सद्चिद् सुख संदोहै ।
'प्रेममोद' रसराज भाव गम अगम अपर सबको है ।।

(४३)

*

नवल दोउ नृतत बहु तन धारी ।
जनकसुता अरु दसरथनंदन केलि विहार अहारी ।।
वन अशोकके मध्य वेदिका चिन्मय जोति पसारी ।
तापर अनुपम सुरतरुवर तर मंडल अगनित द्वारी ।।
तामधि रतन सिंहासन राजत श्याम गौर पियप्यारी ।
चहुँदिसि अलि मंडली विराजति सेवा सौज सुधारी ।।
अष्ट नायिका भाव ललित धरि नायक भाव सुचारी ।
हाव भाव सात्विक संचारी आसन कला अपारी ।
बाजन गान नटनि बहुविधि की व्यापित दिसनि मझारी ।
कोटि कल्प जहँ छन सम लागत 'प्रेममोद' सुख भारी ।।

(४४)

*

आज रासमंडल दोउ राजैं ।
श्यामगौर मनहरन सलोने बहु रतिपति लखि लाजै ।
उमगत अंग अंग रस बरसत रसिक सालि के काजै ।।
वंसी वीन पखाउज आदिक अगनित बाजन बाजै ।
रागिनि राग सुतान रसीले दसदिसि छाइ अवाजै ।।
बन असोक के मध्य अलिन को परतम मुद नित साजै ।
'प्रेममोद' रसराज भाव बिनु सूझ न पाव समाजैं ।।

(४५)

*

वन अशोक के मध्य अलिन संग, मंडल रास रचाई ।
प्राकृत काम अयोग जानि दोउ, दिव्य मदन प्रगटाई ।
रति समेत करि कलन नवल रस, दंपति उर उमगाई ।।
नटन लगे ललिलाल अमिततन, हावभाव दरसाई ।
बाजत बीन मृदंग बाँसुरी, सारंगी सहनाई ।।
षटरितु रागिनि राग ताल सब, रूप अनूप सुहाई ।
भूषन वसन सरस धुनि चमकन, सुख सागर उमगाई ।।
सुमन सुगंध झरत दसहू दिसि, त्रिविध पवन लहराई ।
मोर हंस सारस पारावत, अगनित खग-गति लाई ।।
गेंद पतंग लटू चक भँवरा, चौपर खेल दिखाई ।
जलथल गगन समीर तेजमय, अदृश्य जवाई ।
लता सुमन द्रुम कनक मनिनमय, कुंजनि सेज बिछाई ।
युगलरूप विलसत बरसत रस, कहाँ कवन विधि गाई ।।
रतिविपरीत रीति रस आसन, सात्विक कलन जमाई ।
'प्रेममोद' रसिकन उर दरसत, सद्गुरु कृपा सुआई ।।

(४६)

* लावनी *

सरद परब लखि आजु चंद उजियारी ।
मंडल रास बनाय नटत पियप्यारी ।।
वन असोक मधि एक वेदिका भारी ।
चहुँदिसि मनिमय कुंज सुभग सुखकारी ।।
पल्लव दल फल फूल लता द्रुमडारी ।
सरित सरोवर परसि पवन मनहारी ।।
सारस हंस चकोर कोकिला सारी ।
बजे वीना मृदंग मुचंग सितारी ।।
गावत कल कोकिल बैन ताल सम धारी ।
बहु सखि करहिं कलोल कला विस्तारी ।।
जो जिनके मनभाव मदन मतवारी ।
'प्रेमलता' करि रास सीय सुकुमारी ।।

(४७)

*

सखि आई रसीली शरद रतिया ।
सरयू तीर चाँदनी छाई, शोभित कुंज हरित लतिया ।
रमत रास दोउ रास कुंजन बिच, थेइ थेइ करत अजब गतिया ।।
यामें रास रमत प्यारी संग, आली री हुलसत छतिया ।
'सियाअली' दोउ दे गलबाँही, हँसि हँसि करत रसीली बतिया ।।

(४८)

*

देखो सखि ! आवत रास बिहारी ।
सरयू तीर शृंगार विपिन ते, अति अनूप छवि धारी ।।
सीताराम मनोहर जोरी, चितवनि की वलिहारी ।
कुण्डल अलक हलक बुलाक की, दलकत हृदय हमारी ।।
संग सखी सोहैं अलवेली, बनी ठनी छवि न्यारी ।
सुमन शृंगार किये नख शिख लौं, निज कर श्याम सँवारी ।।
प्रभु आगे सखि खेलति आवैं, फूलन गेन्द उछारी ।
झुकि झुकि लेति परस्पर मारति, लखि आनन्द पिय प्यारी ।।
आये दम्पति 'रामचरण' सखि, सुमन शृंगार उतारी ।
नख शिख मणि भूषण शृंगार करि, सिंहासन बैठारी ।।

(४९)

*

सखिन बिच नृत्यत युगल किशोर ।
विपिन प्रमोद सरोजा तट पर, दिव्य भूमि चमकति चहुँओर ।
चक्राकर रास मण्डल रचि, राग रागिनी के कल शोर ।।
चन्द्रकला विमलादि रंगीली, वीण मृदंग लिये कर घोर ।
चारुशिला सुभगा हेमा लिये, मुरली मुचंग किन्नरी जोर ।।
चन्द्रा चन्द्रवती मिलि गावति, क्षेमा स्वरहिं भरत रस बोर ।
मदनकला करताल बजावत, सारंगी नन्दा टंकोर ।।
पिय शिर सुभग सुक्रीट विराजै, चन्द्रिका सीता के शिर रोर ।
चन्द्रहार प्यारी उर चमकत, पिय उर मोतिन माल उजोर ।।

कोटि कोटि रति काम विमोहन, नटवर वेष श्याम अरु गोर ।
रूप माधुरी कहि न परत है, अंग अंग छवि के उठत हिलोर ।।
कर से कर दोऊ मिलि धारे, नयनन सैन चलत दुहुँ ओर ।
कबहुँ अधर रस पियत परस्पर, रस मतवारे दोउ चितचोर ।।
प्यारी हाव पिता चित करषत, पिय के भाव प्यारी निज ओर ।
दोउ रस सिन्धु मगन रसलम्पट, 'अग्रअली' नहिं चाहत भोर ।।

(५०)

*

सीताराम रास करत सरयूतट माई ।।
गावत संगीत राग भाग बड़े सखियन के, पावत रिझवार प्यार हार गल लगाई । नूपुर धुनि छम छमात परसत पग धम धमात, गावत सुख शरद राग समय सुख सोहाई ।। मुग्धा सुख सिय निहारि पिय मुख बलिहारि लेत, देत ताल लय निहारि जयति जय बड़ाई । 'जानकिवर' सुख सोहाग निरखत अनुराग वाग, फूलत हिय जागि उठ्यो गुरुपद मन लाई ।।

(५१)

* आरती *

सियावर सीता प्यारी की, आरती रास विहारी की ।।
शरद ऋतु सुखद सुभाश्विन मास, पूर्णिमा पूरण चन्द्र प्रकाश,
नखतमणि निर्मल सुमन सुहास, नेत्रजा पुलिन प्रमोद विलास,
मध्यनिशि भाग, सुहावन लाग, उमग अनुराग, रास रस पाग,
नटनि दम्पति भुजधारी की ।। आरती० ।।
नवेली नख शिख सजि आई, संग बहु वाद्य यन्त्र लाई,
मण्डलाकार घेरि आई, नाचि ताथेई ताथेई गाई,
है सखियन समाज, रमत रघुराज, रसिक शिरताज, मदन रतिलाज,
जानकी रमण विहारी की ।। आरती०।।

पुस्तक-परिचय

रसिककुल भूषण पूर्वाचार्यों द्वारा विरचित

(छन्द-राग संकेतयुक्त)

प्रकरण

श्री रसकान्ति	पद	पृष्ठ
भादो जल-विहार	..... ५०	५-२४
रास-विहार	..... ५१	२५-४०

पदावली

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

सम्पादक सह-प्रकाशक

महान्त सियाछबीलीशरण 'भैय्या जी'

श्रीरसमोद कुंज, अयोध्या जी-२२४१२३

आवृत्ति

प्रथम / ११०० प्रतियाँ

संस्करण

प्रथम / भादो २०६४ वि०सं०

पुस्तक प्राप्ति-स्थान

श्रीरसमोद कुंज

ऋणमोचन घाट, अयोध्या जी-२२४१२३

उत्तर प्रदेश

मुद्रक

उमानाथ प्रेस, बाढ़, पटना-८०३२१४

निछावर / सहयोग राशि : पन्द्रह रुपये मात्र